HISTORY

B.A.(Hon's)PART-II

Paper-I (Mediaeval Indian History)

Unit-I (कुतुबुद्दीन ऐबक की उपलब्धियां.)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 09

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें 👇👇👇

https://youtu.be/tB-zMsJenNw

कुतुबुद्दीन ऐबक की उपलब्धियों का मूल्यांकन

कुतुबुद्दीन ऐबक:- गुलाम वंश तथा दिल्ली सल्तनत का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक था। वह भारत वर्ष का पहला मुसलमान शासक था जिसने भारत में मुसलमानों का स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। उसके माता-पिता तुर्की थे, अतः उसका जन्म तुर्किस्तान के कुलीन वंश में हुआ था। बाल्यकाल में ही वह खुरासन के व्यापारी के हाथों गुलाम के रूप में पेश किया गया। निशापुर के काजी ने उसे खरीद लिया था। उसके गुणों तथा स्वभाव से प्रभावित होकर काजी ने उसकी शिक्षा-दीक्षा की समुचित व्यवस्था कर दी। अतः काजी ने अपने पुत्रों के साथ ही उसको धार्मिक एवं सैनिक प्रशिक्षण दिया परंतु काजी के मरने के बाद उसके उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन को गजनी ले आये और उसे मुहमद गोरी के हाथों बेच दिया।

✓ कुतुबुद्दीन का उत्कर्ष:-

कुतुबुद्दीन सर्वगुण संपन्न था। कुछ ही दिनों में उसने अपने नये स्वामी को अपने गुणों से मुग्ध कर लिया और स्वामी भक्त विश्वासपात्र सेवक बन गया, जबकि कुतुबुद्दीन बहुत ही कुरुप था परंतु उसका दिल और दिमाग बहुत ही साफ था। उसके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर उसके स्वामी(गोरी) ने उसे ऐबक की उपाधि दे दी। ऐबक का अर्थ होता है "चंद्रमुखी"।

ऐबक में बाहरी तड़क-भड़क नहीं थी। उसने अपने साहस,पौरूषता और उदारता से अपने स्वामी का ध्यान आकृष्ट कर लिया था। वह अपने स्वामी के प्रति इतना भक्ति परायण था कि उसके स्वामी ने उसे सेना का अधिकारी बना दिया। उसे अमीर ए आखुर (अस्तबलों) का अधिकारी भी नियुक्त किया गया। मोहम्मद गोरी अपने भारतीय अभियानों में उसको भी साथ लेकर आया था। यहां भी उसने अपने स्वामी की प्रशंसनीय सेवा की। जिससे खुश होकर गोरी ने उसे तराईन की दूसरी लड़ाई के बाद भारतीय विजयों का प्रबंधक बना दिया। इस तरह से एक इतिहासकार के शब्दों में "केवल शासन प्रबंध के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि अपनी विजयों के क्षेत्र को और भी विस्तृत करने के लिए अपने विवेक का प्रयोग करने में उसे पूरी छूट मिल गई"। ऐबक ने

दिल्ली के समीप इंद्रप्रस्थ को अपना केंद्र बनाया। अतः ऐबक ने अनन्य भक्ति के साथ अपने स्वामी के शासनकाल में ही भारत का गवर्नर के रूप में कार्य किया। जब गोरी का देहांत हुआ तो उसने स्वयं दिल्ली पर अपना स्वतंत्र राज स्थापित कर लिया। जो दिल्ली सल्तनत के नाम से भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है।

मुहम्मद गोरी के प्रतिनिधि के रुप में ऐबक की भारत विजय- ऐबक ने अपने स्वामी मोहम्मद गोरी के जीवन काल में ही सन 1192 ईस्वी में अजमेर और मेरठ के विद्रोह को दबाया। उसी साल कन्नौज के शासक जयचंद को परास्त किया। सन 1197 ईस्वी में उसने गुजरात के भीमदेव को दंडित किया और उसकी राजधानी को लूटता हुआ दिल्ली पहुंच गया। इसके बाद बदायूं को भी जीता। 1202 ईस्वी में उसने कालिंजर के किले को भी जीता। इसके बाद उसने मोहाबनगर कोई भी जीता। उसके एक सैनीक इख्तियारउद्दीन ने बिहार और बंगाल के कुछ भागों को भी जीत लिया। इस तरह से वह सन 1206 ईस्वी तक अपने स्वामी के प्रतिनिधि बनकर लगभग सारे उतरी भारत पर अधिकार कर चुका था।

ऐबक का सिंहासनारोहण:- मोहम्मद गौरी के देहांत के बाद लाहौर के नागरिकों ने कुतुबुद्दीन ऐबक को सार्वभौम शक्तियां ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया। अतः उसने लाहौर जाकर सार्वभौम शक्तियां ग्रहण की। इस तरह से 24 जून 1206 ईस्वी को ऐबक का औपचारिक रूप से सिहासनारोहण हुआ। गद्दी पर बैठने के बाद ऐबक को किसी के विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। बंगाल एवं बिहार के शासक मोहम्मद बख्तियार ने उसकी अधीनता में कार्य करना स्वीकार कर लिया। सिंध के शासक कुबाचा के साथ ऐबक ने अपनी बहन का विवाह कर दिया इसीलिए कुबाचा ने भी विरोध नहीं किया। बदायूं के शासक के साथ उसने अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था। इस तरह से उसने भी विरोध नहीं किया। गजनी के शासक याल्दुज की पुत्री के साथ उसने अपना विवाह कर लिया। इसके बाद भी यल्दुज ने पंजाब पर अपना अधिकार घोषित कर लिया। ऐबक इसको किसी भी कीमत पर बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं था। फलत: ऐबक ने गजनी पर आक्रमण कर उसे अधिकृत कर लिया। अंत में यल्दुज गजनी से भाग खड़ा हुआ। अब गजनी पर एबक का अधिकार हो गया परंतु गजनी में वह प्रसिद्ध ना हो सका। गजनी में उसकी बदनामी फैलने लगी गजनी के प्रजा के साथ उसका संबंध अच्छा नहीं रहा। क्योंकि ऐबक अपनी विजय को संगठित न कर वहां अमीरों के साथ आमोद प्रमोद व्यस्त रहने लगा। गजनी के प्रजा ने यालदूज को पुनः गजनी में बुलाया और ऐबक को वहां से मार भगाया। ऐबक ने मात्र 40 दिन तक गजनी में शासन किया। लेकिन इतने ही दिनों में ऐबक ने गजनी के सुल्तान मुहम्मद से राजसत्ता के चिन्ह छत्तर और दूरवाश प्राप्त कर लिया और दासता से मुक्ति पा लिया। इस प्रकार ऐबक का गजनी अभियान असफल रहा और वह लाहौर भाग आया।

इधर लखनौती में अली मर्दन खान ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया परंतु खिलजी सरदारों ने उसको मार भगा कर उसका स्थान मोहम्मद शेरन को दिया। अली मर्दन खान को जेल में बंद कर दिया परंतु वह जेल से निकलकर दिल्ली पहुंचा। उसने ऐबक को बंगाल पर हस्तक्षेप करने के लिए प्रलोभन दिया। खिलजी लोग ऐबक को अपना सर्वोच्च स्वामी मानने के लिए तैयार हो गए। अत्यधिक व्यस्तता के वजह से ऐबक ने राजदूतों पर आक्रमण नहीं किया। एक दिन पोलो खेलते समय सन 1210 ई. में घोड़े पर से गिर जाने की वजह से ऐबक की मृत्यु हो गई।

ऐबक का मूल्यांकन....

ऐबक एक के शासक के रूप में एक कुशल प्रतिभावान शासक के अलावा वह एक कुशल सैनिक और सेनानायक था। वह एक उदार व्यक्ति था। वह खुले दिल से लोगों को दान देता था इसीलिए लोग उसे लाख बख्श कहते थे अर्थात लाखों का दाता कहते थे।

ऐबक ने भारत में इस्लाम धर्म का काफी प्रचार किया। मुस्लिम भारत को गजनी से मुक्त करके ऐबक ने भारत में सत्ता के प्रचार के लिए काफी सहायता की। वह हिंदुओं के प्रति उदार था। ऐबक ने लोगों को अपने हाथों से न्याय दिया। राज्य में शांति समृद्धि का संचार करने के लिए घोर परिश्रम किया।

कला एवं साहित्य का प्रेमी:- ऐबक कला एवं साहित्य का प्रेमी था। उसने अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा का निर्माण किया। दिल्ली में कुवत उल इस्लाम अर्थात इस्लामों की शक्ति नामक मस्जिद बनवाया। ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण ढाई दिन में हुआ था इसीलिए आज भी वहां ढाई दिन का मेला लगता है। ऐबक ने दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण किया था

लेकिन इसे पूरा करने का श्रेय इल्तुतमिश को प्रदान है। उस के दरबार में अनेक विद्वान आश्रय पाते थे। ताज उल मासिर एवं तारीख ए मुबारक शाही के लेखक हसन निजामी एवं फख्र मुदब्बीर उसके दरबार में रहते थे।

अतः ऐबक का 4 वर्ष का शासनकाल एक अद्वितीय शासनकाल था।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!!